IJAER/September-October 2016/Volume-5/Issue-2/Article No-1/ 01-04 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

ग्रामीण भारत में महिला बीड़ी श्रमिकों का जोखिम भरा स्वास्थ्य

[1]श्रीमति रेणु, [2]डा0 आषा सिंह

[1]शोध छात्रा, [2]शोध पर्यवेक्षक

[2]प्रवक्ता गृह विज्ञान विभाग

[1]वेंकटेश्वर विश्वविधालय, [2]जे0 एस0 एच0 पी0 जी0 कालेज

[1]गजरौला अमरोहा

सार

बीड़ी उद्योग समाज का सबसे कमजोर क्षेत्र है वहाँ पर कार्य कर रहे मजदूर बड़ी संख्या में गाँवों में बीड़ी रोलिंग पर निर्भर हैं। वे कम पढ़े लिखे होने के बावजूद अपने अस्तित्व के लिये बीड़ी बनाने का काम जारी रखे हुए हैं। ठेकेदारों और मालिकों के द्वारा शिक्षा और चिकित्सा एवं सरकारक की नीतियों की अपेक्षा की जाती रही है।

बीड़ी उद्योग समाज का सबसे कमजोर क्षेत्र है और बड़ी संख्या में वहाँ के ग्रामीण मजदूर बीड़ी रोलिंग पर निर्भर हैं। मजदूरों की कम मजदूरी होने के बावजूद भी वे अपने अस्तित्व के लिए कार्य कर रहे हैं। सरकार, ठेकेदारों शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं में कमी है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला मजदूर औद्योगिक क्षेत्रों में ना जाकर अपने घरों में ही बीड़ी रोलिंग का कार्य करती हैं। महिला मजदूर इस कारण से स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त रहती हैं। इस अध्ययन का कारण बनता है कि महिलाओं के लिये जागरूकता कार्यक्रम चलाये जाये जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा, शिक्षा और उपचारात्मक उपायों का प्रयोग हो। इस योजना के अन्तर्गत सभी महिलाओं को लाभ प्रदान हो।

मुख्य शब्द – बीड़ी उद्योग, स्वास्थ्य का खतरा, कुटीर उद्योग, सामाजिक आर्थिक स्थिति

परिचय–

एक बीड़ी बनाने के लिये एक पत्तें का प्रयोग किया जाता है जिसमें तंबाकू भरकर उसके ऊपर से धागें बाँध देते हैं। बीड़ी के अन्तर्गत तंबाकू की खपत कम होने के कारण ये काफी सस्ता होता है। इसलिए यह कम आर्थिक समूहों और ग्रामीण आबादी के बीच बेहद लोकप्रिय है। भारत और उसके पड़ौसी देशों में भी लगभग ८०० मीलियन बीड़ी हर साल भारत में बेच रहे हैं। परन्तु बीड़ी के अधिक से अधिक प्रयोग करने से स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है क्योंकि इसके अन्तर्गत सर्वाधिक निकोटिन, कार्बन मोनो आक्साइड पाया जाता है। बीड़ी उद्योग हमारे भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के कृषक मजदूरों के लिये आजीविका का सहायक स्रोत है। भारत में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाने मे बीड़ी उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह उद्योग असंगठित क्षेत्रों के बीच सबसे बड़ा उद्योग है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में चल रहा बीड़ी उद्योग महिलाओं, पुरूषों और बच्चों के लिये रोजगार का बड़ा साधन है। ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा व रोजगार की कमी के कारण वहाँ के लोग बीड़ी उद्योग में कार्य करने के लिये मजबूर होते हैं जबकि यह उनके स्वास्थ्य के लिये हानिकार है।

भारत में बीड़ी उद्योग की उत्पत्ति–

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बीड़ी रोलिंग उद्योग कब व कैसे संचालित किया गया इसके बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं प्राप्त है। प्राचीन भारत के जनजातिय लोग पेड़ों से पत्तियों प्राप्त करके उसमें तंबाकू भरकर और उसे लपेट कर धूमपान किया करते थे जिसे आज हम बीड़ी के नाम से जानते हैं। एक लेख के अनुसार, तंबाकू की खेती आन्ध्रप्रदेश में कृष्णदेव राय के क्षेत्र में की गयी थी। सत्रहवीं शताब्दी के औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार में पुर्तगालियों द्वारा तंबाकू का उत्पादन व खपत किया गया। १७वीं शताब्दी के बाद बीड़ी उद्योग कार्य गुजरात में शुरू हुआ। हुक्का धुम्रपान की शुरूआत के बाद बीड़ी खेड़ा और पंचामहल जिले से विकसित की गयी। कुछ दिनों बाद बीड़ी रोलिंग काम मुम्बई में एवं देश के कुछ निचले हिस्सों में भी फैल गया। गुजरात में १८६६ में

सूखे के दौरान बीड़ी रोलिंग के कई परिवारों को मध्यप्रदेश की ओर पलायन करने के लिये मजबूर होना पड़ा था जहाँ पर बीड़ी उद्योग एक लघु उद्योग के रूप में विकसित की गई। वर्मा और रहमान ने २००५ में आधुनिक बीड़ी का उद्योग जबलपुर के लिये गुजरात में शुरू किया। मोहनलालन और हरगोविंद दास १६०२ में तेजी से ब्राँड ट्रेडमार्क प्राप्त किया। १६१८ और १६१२ के बीच रेलवे नेटवर्क और बीड़ी का उत्पादन तेलंगाना देश के सभी राज्यों में फैल गया जैसे हैदराबाद, बंगलौर और मद्रास। भारत सरकार के अनुसार १६४७ में मद्रास भारत का सबसे पुराना बीड़ी निमार्ण का क्षेत्र था।

माधवी २००६ के अनुसार, स्वदेशी आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी द्वारा १६२० में माल का बहिष्कार करके एक सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया। जिसका उद्देश्य सिग्रेट, बीड़ी और धूम्रपान से सम्बन्धित सामग्रियों का बहिष्कार करना था। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत के उद्योगों में से बीड़ी उद्योग भी एक महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग बन गया।

१६६० के दौरान च्वूमत सववउ की खोज के बाद भी बहुत से बुनकर च्वूमत सववउ के कार्य को छोड़कर बीड़ी बनाने के कार्य को अपनाने लगे थे। १६७८ में गुजरात व कर्नाटक में तंबाकू उत्पादन उद्योग सबसे प्रचलित उद्योगों में शामिल किया गया।

बीड़ी निर्माण केन्द्र मंगलौर, मैसूर, निपानी, जबलपुर, सागर, त्रुमवैली, चेन्नई, कन्नौर, निजामाबाद, करीमनगर एवं बारगंल में स्थापित हुए। १६८० के बाद बीड़ी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये पश्चिम बंगाल एवं बिहार में कुछ उपरिकेन्द्र स्थापित किये गये क्योंकि इन प्रदेशों में कच्चे माल की उपलब्धता आसानी से हो जाती थी एवं यहाँ सस्ती मजदूरी भी उपलब्ध थी।

वर्तमान स्थिति में बीड़ी उद्योगों में सबसे अधिक रोजगार के शेयर (१७:) मध्यप्रदेश में हैं, तमिलनाडू में (१४:), आन्ध्रप्रदेश में (१४:), कर्नाटक में (१२:), पश्चिम बंगाल में (११:) एवं उत्तर प्रदेश में (१०:) है। हॉलाकि बंगाल में सुन्दरवन वास्तव में बीड़ी उद्योग के लिये नहीं जाना जाता है।

औ मैली के अनुसार (१६१४) तंबाकू आमतौर पर केवल इस क्षेत्र में घरेलू उपयोग के लिये विकसित किया गया था। तंबाकू के दो प्रकार हैं छिगंली और मंधाता जिले के उत्तरी और उत्तर-पूर्वी भाग (हंटर, १८७५) में मुख्यतः बड़े हो रहे थे। तो क्या यह माना जाता है कि यह उद्योग एक से अधिक सदी या साल के लिये विद्यमान है।

बीड़ी उद्योग के स्थान-

दुनिया का सबसे बड़ा डेल्टा क्षेत्र सुन्दरवन पश्चिम बंगाल के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर सिति है। १०२ दीपों के साथ भारतीय सुन्दरवन का कुल क्षेत्रफल लगभग ६,६०० वर्ग किमी तक शामिल किया गया है। लगभग ४० प्रतिशत क्षेत्रों में २५,५०० वर्ग किमी तक शामिल है और शेष क्षेत्रफल बंगलादेश में शामिल है। वहाँ १७ सुन्दरवन में सामुदायिक विकास खंड जिनमें से १३ ब्लाकों के दक्षिण २४ परगना जिलों में स्थित हैं। शेष ब्लाक उत्तरी २४ परगना जिलों में स्थित हैं क्योंकि दूरस्थ स्थानों और नौकरी की अनुपलब्धता के कारण लोग, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों को बीड़ी रोलिंग करने के लिए मजबूर किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य-

1. इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिला एवं बाल श्रम की शक्ति एवं उनका विकास में योगदान का मूल्यांकन करना है।
2. भारत के कुटीर उद्योगों और बीड़ी श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के रूप में बीड़ी उद्योगों के वर्तमान परिदृश्य का मूल्यांकन करना है।
3. विभिन्न भागों में बीड़ी उद्योगों के विकास व वितरण का विश्लेषण करना है।
4. सहकारी समितियों और बीड़ी उद्योगों में स्वयं सहायता समूह के गठन की संभावनाओं का पता लगाने के लिये।
5. बीड़ी मजदूरों की वर्तमान समस्याओं का पता लगाने के लिये।
6. आर्थिक विकास को बेहतर करने के लिये कुछ सुझाव।
7. इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिये उपचारात्मक उपायों का प्रस्ताव।

डेटा स्रोत–

डेटा प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्रोतों से अर्जित किया गया है। प्राथमिक स्रोतों का मुख्य माध्यम डेटा के संग्रह में शामिल कुछ घरों में सर्वेक्षण के अध्ययन से लिया गया है। माध्यमिक डेटा जिला सांख्यिकी हैंडबुक, भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट शामिल है। इन उद्योगों और मजदूरों के बारे में अन्य जानकारी भारत सरकार की जनगणना, आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट, श्रम कल्याण विभाग व पंश्चिम बंगाल सरकार से, पुस्तकों एवं पत्रिकाओं से एकत्रित किया गया है।

कार्यप्रणाली–

1. सांख्यिकी पद्धति प्रश्नावली की मदद से स्तरीकृत नमूना द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण के होते हैं और माध्यमिक डेटा भारत के श्रम आयोग व बीड़ी से सम्बन्धित पत्रिकाओं व पुस्तकों एवं जनगणना से एकत्रित हैं।
2. कार्टोग्राफिक कार्यप्रणाली में डेटा और सांख्यिकीय आकड़ों का प्रतिनिधित्व के आधार पर विषयगत नक्शें तैयार होते हैं व विश्लेषण के लिये कई चित्र तैयार किये जाते हैं।

बीड़ी निर्माण व बीड़ी रोलिंग की प्रक्रिया–

बीड़ी निर्माण में कई अंतर सम्बन्धित चरण शामिल हैं। सबसे पहले, तेंदू पत्तें भारत के विभिन्न राज्यों से एकत्रित किये जाते हैं उसके बाद बीड़ी श्रमिकों के थोक ठेकदार केन्द्रित राज्यां द्वारा नीलामी की गयी और सब कुछ खत्म हो गया। फिल बिचौलियों के माध्यम से तेंदूपत्तें, तंबाकू, यार्न और मजदूरों के लिये धागों की आपूर्ति की जाती है। बीड़ी निर्माण में चार मुख्य चरण शामिल हैं। धागा, पत्तियों को बीड़ी के विशिष्ट आकृति व आकार में काटना एवं तंबाकू को आवश्यकतानुसार बीड़ी में भरना, बीड़ी को रोल करना एवं बीड़ी को लपेटना। आमतौर पर २५ बीड़ी छड़ी एक बंण्डल बना रहे हैं और इलाज के लिये ओवन में रखा जाता है और अन्त में ठेकेदारों द्वारा बंडलों को बाजार में बेचना।

स्वास्थ्य समस्याओं के लिये उपचारात्मक उपाय–

बीड़ी कार्य संघों के अध्यक्ष, सूर्य नारायण राव (१९८८) में बीड़ी उद्योग में कार्य कर रहीं महिलाओं और कार्यकर्ताओं से बंधुआ मजदूरों की तरह व्यवहार किया जाता है। सामान्य रूप से कहीं भी काम प्रतिदिन १० से १२ घंटें की बीच होता है। मजदूर काफी दयनीय स्थिति में रहते हैं। मजदूरों का बहुत शोषण हो रहा है। इसलिए महिला बीड़ी श्रमिकों के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाओं की आवश्यकता है जो निम्नलिखित है –

1. बीड़ी श्रमिकों के बीच उचित स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता प्रदान करना।
2. पर्याप्त दवाओं की उपलब्धता होना।
3. आयुर्वेदिक औषधालयों की आवश्यकता का होना।
4. टी०बी०, बिस्तरों की अस्पतालों में आरक्षण मिलना।
5. टी०बी०, कैंसर, मानसिक रोग आदि से पीड़ित बीड़ी श्रमिकों के इलाज के लिये योजनाएँ।
6. चश्में को खरीदने के लिये महिलाओं को बीड़ी श्रमिकों के लिये वित्तीय सहायता प्रदान करना।
7. दिल की बीमारी के सम्बन्ध में महिला श्रमिकों को वित्तीय सहायता के रूप में व्यय की प्रतिपूर्ति, गुर्दों का प्रत्यारोपण की व्यवस्था।
8. सभी अस्पतालों में पर्याप्त संख्या में महिला डाक्टरों की उपलब्धता।
9. के.डी.बी.सी. संगठन के तहत सामुदायिक संगठन और आत्म समूहों में आधारित बीड़ी महिलायें असंगठित घर का आयोजन सक्षम करें।
10. रोजगार के अवसरों की महिलाओं की जागरूकता में सुधार के माध्यम से व्यावसायिक विकल्पों को चौड़ा उद्यमशीलता विकास कार्यक्रमों और स्थानीय स्तर पर भागीदारी तेजी से मूल्यांकन अभ्यास करने के लिये उनके संगठनों के माध्यम से अयोजित किया।
11. पश्चिम बंगाल में बंधन सूक्ष्म वित उपलब्ध कराने के लिये क्रेडिट के लिये संबंध में सुविधाओं के रूप में राज्यों नीति को प्रोत्साहित करने के लिये बैंकों के लिये निर्धारित राशि की आवश्यकता है कडे जमानत के बिना महिलाओं के लिये सूक्ष्म ऋण।

<u>बीड़ी उद्योग में काम करने वाली महिलाओं के लिये सुझाव–</u>

1. चेहरे पर नकाब का प्रयोग करें।
2. बीड़ी उद्योगों में कार्य करते समय गंदें हाथों से खाने का सेवन न करें।
3. बीड़ी उद्योगों में स्वच्छ पीने के पानी का प्रबंध होना चाहिए।
4. बीड़ी उद्योगों में काम करने वाली महिलाओं के लिये कार्य करने के लिये पर्याप्त स्थान की व्यवस्था होनी चाहिए।
5. बीड़ी उद्य़ोगों के ठेकेदारों व मालिकों को वहाँ काम करने वाले मजदूरों के स्वास्थ्य परीक्षण का ध्यान रखना चाहिए।
6. बीड़ी उद्योगों मे ंप्रकाश की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
7. बीड़ी उद्योगों में काम करने वाली महिलाओं के कार्य करने के घंटें में कुछ अन्तराल होना चाहिए।
8. बीड़ी उद्योगों में कार्य करने वाली महिलायें और बच्चें स्वयं बीड़ी का सेवन नहीं करने चाहिए।

<u>संदर्भ–</u>

1. बागीची बाई और मुखोपाध्याय, ए (१९९६)ः पश्चिम में बीड़ी उद्योग मुर्शिदाबाद जिले से बाल श्रम बंगाल महिला अध्ययन, आदवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता स्कूल।
2. ळपतपंचचंए एस (१९८७)ः ग्रामीण विकास में बीड़ी रोलिंग। दया पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।
3. मोहनदास, एम (१९८०)ः केरल में बीड़ी श्रमिकः जीवन, आर्थिक और राजनैतिक साप्ताहिक की स्थिति। वाल्यूम ग्ट छवण् ३६ए चच १५१७.१५२३)
4. तंरंजेपदहीए ंरंए च्ंकउंसंजींए सी (१९९५)ः दक्षिण भारत में बीड़ी रोलिंग की व्यावसायिक बीमारी, पर्यावरण अर्थशास्त्र, टवसण् १३ए छवअण् ०४ए चच ८७५.८७६)
5. थामस, मैं फ्रैंक, आरडब्ल्यू और राघवन, पी (१९९८)ः एक भारतीय औद्योगिक में काम पर लोकतंत्र सहकारीः केरल दिनेश बीड़ी का अध्ययन। कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, इथाका, न्यूयॉर्क।
6. वर्मा, ब्रिटेन और रहमान, एम०एम० (२००५), तंबाकू, तेंदूपत्तें और बीड़ी श्रमिक भारत में समस्यायें और संभावनायें, शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली।